# प्रथम कर्नाटक युद्ध का परिणाम

# या, प्रथम आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध का परिणाम,

# (Result of First Angalo-French War)

**यूरोप में 1748 ई० में एक्सला-शेपल की सन्धि से ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हो गया। इस प्रकार भारत में भी अंगरेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध बन्द हो गया। सन्धि के अनुसार मद्रास अंगरेजों को लौटा देना पड़ा और बदले में फ्रांस को अमेरिका में लूबर का क्षेत्र प्राप्त हुआ। इस तरह से प्रथम कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।**

एक्सला-शेपल की सन्धि ने डुप्ले की आशा पर पानी फेर दिया। भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य की स्थापना का स्वप्न पूरा नहीं हो सका। अंगरेजों को शक्ति नष्ट नहीं हुई। विजय अथवा पराजय का निर्णय नहीं हो सका।

बाह्य दृष्टि से कर्नाटक के प्रथम युद्ध का परिणाम भारतीय राजनीति की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं था। मुख्य रूप से यह युद्ध अंगरेज और फ्रांसीसी कम्पनियों के बीच हुआ था।

युद्ध यूरोपीय राजनीतिक घटनाचक्र का परिणाम था। अंगरेज और फ्रांसीसी कम्पनियाँ पूर्ववत् कायम रहीं। दोनों के अधिकार और सीमाओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

परन्तु कर्नाटक का प्रथम युद्ध आन्तरिक दृष्टि से भारतीय इतिहास की एक युगान्तकारी घटना माना जाता है। इस युद्ध ने भारतीय राजनीति के खोखलेपन को पूर्णतया स्पष्ट कर दिया।

अंगरेज और फ्रांसीसी भारतीय नरेशों की युद्ध पद्धति और सैनिक दुर्बलता से परिचित हो गये। अबतक अंगरेज और फ्रांसीसी केवल सामुद्रिक शक्ति के विकास पर ही बल दे रहे थे। परन्तु भारतीय नरेशों की कमजोरी को देखते हुए उनमें राजनीतिक प्रभुत्व कायम करने का हौसला बढ़ गया।

कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन ने युद्ध रोकने का प्रयास किया था। परन्तु नवाब की विशाल सेना फ्रांसीसियों से युद्ध में पराजित हुई।

फ्रांसीसियों की विजय से यह स्पष्ट हो गया कि थोड़ी-सी प्रशिक्षित यूरोपीय सेना बड़ी से बड़ी भारतीय सेना को आसानी से मात दे सकती है। इस विजय से फ्रांसीसियों की केवल प्रतिष्ठा ही नहीं बढ़ी, बल्कि कूटनीति में भी फ्रांसीसियों से कर्नाटक का नवाब मात खा गया । भारतीय नरेशों का आपसी संघर्ष, उनकी सैनिक कमजोरी, नौसेना का अभाव, इन सब तत्वों ने मिलकर विदेशियों को भारत में साम्राज्य कायम करने की प्रेरणा दी।

प्रो० डॉडवेल के शब्दों में, "यद्यपि बाहर से देखने पर ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का कोई परिणाम नहीं निकला और भारत की राजनीतिक समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी रही, फिर भी यह भारतीय इतिहास की एक युगान्तकारी घटना है। इसने स्पष्ट कर दिया कि बुद्धिमानी के साथ प्रयोग किये जाने पर सामुद्रिक शक्ति का कितना अधिक प्रभाव पड़ सकता है और यूरोपीय सामरिक पद्धति भारतीय सेनाओं द्वारा अनुसरण की जानेवाली युद्ध-पद्धति से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। तत्कालीन भारतीय राज्य व्यवस्था जर्जर होकर किस हद तक राजनीतिक पतन की ओर अग्रसर हो गयी थी, यह भी प्रत्यक्षतः दिखाई पड़ने लगा युद्ध अन्त ने यह दिखला दिया कि किस तरह इसके परिणामस्वरूप यूरोपीय व्यापारियों में अब उस क्षेत्र में

प्रवेश करने की प्रवृति जागी जिसकी अबतक उनलोगों ने अपेक्षा की थी। संक्षेप में, इसने डुप्ले के प्रयोगों और क्लाइव की विजय के लिए रास्ता साफ कर दिया।"

# समाप्त.....